मीडिया का साहित्य पर प्रभाव

आसमा मकबूल सौंदलगे बेग

सहायक प्राध्यापक, विभाग: हिंदी विभाग, देवचंद कॉलेज, अर्जुननगर, निपाणी.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18143926

ABSTRACT:

आधुनिक युग में मीडिया और साहित्य दोनों समाज के अभिन्न अंग बन चुके हैं। मीडिया जहाँ जनमानस की त्वरित अभिव्यक्ति का माध्यम है, वहीं साहित्य समाज की गहराई में उतरकर विचार, अनुभूति और संवेदना को अभिव्यक्त करता है। डिजिटल क्रांति ने इन दोनों के बीच नए संबंध और प्रभाव के स्वरूप निर्मित किए हैं। यह शोधपत्र मीडिया द्वारा साहित्यिक अभिव्यक्ति, पाठक-वर्ग, और लेखन-शैली पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है। साथ ही यह भी खोजता है कि मीडिया ने साहित्य को किस हद तक चुनौती दी है और किस हद तक नए अवसर दिए हैं।

KEYWORDS:

साहित्यिक अभिव्यक्ति, डिजिटल क्रांति, लोकतांत्रीकरण, बाजारवाद, सांस्कृतिक सह-अस्तित्व.

प्रस्तावना:

वर्तमान युग को सूचना और संचार का युग कहा जाता है। विज्ञान और तकनीकी विकास ने आज मानव जीवन को तीव्र, तात्कालिक और व्यापक बना दिया है। इस युग की सबसे बड़ी देन "मीडिया" है जो न केवल समाचारों का माध्यम है, बल्कि जनमानस के विचार, संवेदना, संस्कृति और साहित्य को आकार देने वाला शक्तिशाली उपकरण बन चुका है। दूसरी ओर, साहित्य भी समाज का वह दर्पण है जो व्यक्ति के अंतरमन की पीड़ा, आशा, संघर्ष और चेतना को शब्द देता है। जब ये दोनों मीडिया और साहित्य मिलते हैं, तो एक नया सांस्कृतिक, सामाजिक परिदृश्य बनता है। यह परिदृश्य न केवल अभिव्यक्ति का नया रूप गढ़ता है, बल्कि रचनात्मकता की नई दिशाएँ भी खोलता है। किंतु, इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठता है कि मीडिया की तेज़ रफ़्तार और बाज़ारवादी प्रवृत्ति क्या साहित्य की आत्मा को प्रभावित कर रही है?

साहित्य सदैव से गहराई, संवेदना और समाज की चेतना का दर्पण रहा है। वहीं मीडिया तात्कालिकता, आकर्षण और सूचना की

गति का प्रतीक है। इन दोनों का संगम एक ऐसे युग को जन्म देता है जहाँ 'विचार' और 'विज्ञापन', 'संवेदना' और 'संवाद' के बीच की सीमाएँ धुंधली होती जा रही हैं। यह शोध-पत्र इसी जटिल, लेकिन सृजनात्मक संबंध की पड़ताल करता है कि कैसे मीडिया ने साहित्य के रूप, भाषा, संरचना और पाठक संबंधों को परिवर्तित किया है।

1. मीडिया और साहित्य का पारस्परिक संबंध

साहित्य का उद्देश्य सदैव समाज को दिशा देना, मानवीय मूल्यों को जागृत करना और सांस्कृतिक चेतना को जीवित रखना रहा है। मीडिया का उद्देश्य भी इसी समाज को सूचित, शिक्षित और मनोरंजित करना है। दोनों के कार्यक्षेत्र अलग होने के बावजूद, दोनों के केन्द्र में 'मानव' ही है। जहाँ साहित्य व्यक्ति के अंतरमन में उतरता है, वहीं मीडिया उसी भावना को जनमानस तक पहुँचाता है। इसी कारण हिंदी साहित्यकार नामवर सिंह ने कहा था "मीडिया और साहित्य, दोनों समाज के विवेक के दो पंख हैं - एक विचार देता है और दूसरा उसका प्रसार करता है।"

पिछले कुछ दशकों में, विशेषतः 1990 के बाद जब उपग्रह चैनलों और इंटरनेट ने अपनी पकड़ मजबूत की, तब साहित्य ने भी अपनी पारंपरिक सीमाओं से बाहर आकर नए माध्यमों को अपनाया। अब कविता केवल किताबों तक सीमित नहीं रही; वह 'ब्लॉग', 'फेसबुक पोस्ट' और 'इंस्टाग्राम रील' के रूप में सामने आने लगी। इसी प्रकार कहानी, लघुकथा और निबंध भी 'ऑडियोबुक' और 'पॉडकास्ट' के माध्यम से सुनाई जाने लगी। इस परिवर्तन ने साहित्य को जनसुलभ बना दिया।

2. साहित्य की अभिव्यक्ति में मीडिया की भूमिका

मीडिया ने साहित्यिक अभिव्यक्ति को एक व्यापक मंच प्रदान किया है। पहले जहाँ लेखक को पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए वर्षों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, आज वही लेखक एक क्लिक में अपने विचार लाखों पाठकों तक पहुँचा सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे 'हंस ऑनलाइन', 'प्रेमचंद साहित्य पोर्टल', 'प्रयास ब्लॉग', 'कविता कोश' आदि ने नई लेखन परंपरा की नींव रखी है। यहाँ साहित्य अब केवल मुद्रित नहीं, बल्कि इंटरएक्टिव रूप में प्रस्तुत होता है - पाठक प्रतिक्रिया देता है, संवाद करता है, आलोचना करता है, और लेखक पुनः अपनी रचना में संशोधन करता है। यह पारस्परिकता पारंपरिक साहित्य से भिन्न है। अब साहित्य केवल 'लेखक का एकालाप' नहीं, बल्कि 'जनसंवाद' बन गया है। इस परिवर्तन को कुछ आलोचकों ने "साहित्य का लोकतांत्रीकरण"

कहा है।

3. भाषा और शैली में परिवर्तन

मीडिया ने साहित्य की भाषा को भी प्रभावित किया है। अब साहित्यिक लेखन में संवादात्मकता, सादगी और आधुनिक शब्दावली बढ़ी है। टेलीविज़न, विज्ञापन, समाचार-पत्र और सोशल मीडिया ने भाषा को अधिक "सीधा" और "बोलचाल का" बना दिया है। इसका एक सकारात्मक पक्ष यह है कि पाठक अब साहित्य से अधिक जुड़ाव महसूस करता है; वहीं नकारात्मक पक्ष यह है कि भाषा की गहराई, प्रतीकात्मकता और सौंदर्यबोध में कभी-कभी कमी महसूस होती है। जैसा कि डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था- "जब भाषा अपनी गहराई खो देती है, तो साहित्य केवल शब्दों का विन्यास रह जाता है।"

इस दृष्टि से मीडिया ने साहित्य को लोकप्रिय बनाया है, लेकिन उसकी गंभीरता पर प्रश्न भी खड़े किए हैं।

4. लेखक और पाठक के रिश्ते में बदलाव

पूर्व-डिजिटल युग में लेखक और पाठक के बीच एक अदृश्य दूरी थी। लेखक अपने विचार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत करता था और पाठक महीनों बाद प्रतिक्रिया दे पाता था। आज यह दूरी लगभग समाप्त हो चुकी है। सोशल मीडिया ने लेखक को 'लाइव' बना दिया है। अब लेखक और पाठक के बीच तुरंत संवाद संभव है। यह सीधा संवाद साहित्य की दिशा को भी प्रभावित करता है, क्योंकि अब लेखक यह सोचकर लिखता है कि उसका पाठक किस तरह की प्रतिक्रिया देगा। इससे साहित्य अधिक जनमुखी तो हुआ है, लेकिन कभी-कभी यह भी देखा गया है कि लेखक अपनी "लोकप्रियता" के दबाव में "लोकप्रिय विषयों" पर ही लिखने लगता है, जिससे मौलिकता पर प्रभाव पड़ता है।

5. मीडिया की बाज़ारवादी प्रवृत्ति और साहित्य की चुनौती

मीडिया अब केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि एक बड़ा व्यवसाय है। टी.आर.पी., व्यूज़ और क्लिक के दबाव ने उसकी प्राथमिकताओं को बदल दिया है। साहित्य, जो चिंतन और आत्ममंथन का माध्यम था, अब इस तेज़ रफ़्तार मीडिया-युग में कभी-कभी "कंटेंट" बन जाता है। इससे "गहराई की जगह गति" और "संवेदना की जगह सनसनी" हावी होने लगी है। कई आलोचकों का मानना है कि "media ने साहित्य को तत्कालीनता की खाई में धकेल दिया है।" फिर भी, यही

मीडिया साहित्य को नए पाठक और नई ऊर्जा भी दे रहा है।

6. मीडिया द्वारा साहित्यिक पुनर्जागरण

जहाँ एक ओर मीडिया को साहित्य की गहराई घटाने वाला माना गया, वहीं दूसरी ओर उसने साहित्यिक चेतना को पुनर्जीवित भी किया है। डिजिटल स्टोरीटेलिंग, पॉडकास्ट कविता, ऑनलाइन नाट्य मंचन, ई-बुक्स, और वर्चुअल लिटरेचर फेस्टिवल जैसे माध्यमों ने हिंदी साहित्य को नए पाठकों तक पहुँचाया है। आज युवा वर्ग, जो पारंपरिक साहित्य से दूर हो गया था, वह इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ब्लॉग्स के माध्यम से साहित्य से दोबारा जुड़ रहा है। इस प्रकार मीडिया ने साहित्य को समकालीन समाज की धड़कन के अनुरूप बना दिया है।

7. मीडिया युग का साहित्य: एक नए विमर्श की दिशा

मीडिया के युग में साहित्य का स्वर भी बदला है। अब लेखन में सामाजिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक और लैंगिक विमर्श के नए आयाम जुड़े हैं। 'फेमिनिस्ट लिटरेचर', 'दलित विमर्श', 'क्वियर लिटरेचर', और 'डिजिटल एक्टिविज़्म' जैसे विषय अब साहित्य और मीडिया दोनों में प्रमुखता से उभर रहे हैं। इन विमर्शों ने साहित्य को अधिक लोकतांत्रिक, समावेशी और जीवंत बनाया है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि मीडिया ने साहित्य की सीमाएँ नहीं तोड़ीं, बल्कि उन्हें विस्तारित किया है।

मीडिया और साहित्य दोनों समाज के विचारशील अंग हैं -एक समाज के तथ्य को उजागर करता है, तो दूसरा समाज की भावना को। दोनों मिलकर मानवीय सभ्यता के चिंतन, संवेदना और सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करते हैं। आज के युग में जहाँ मीडिया ने संचार के आयामों को व्यापक और तीव्र बनाया है, वहीं साहित्य ने इन आयामों में गहराई और अर्थ जोड़ा है। इस प्रकार, मीडिया और साहित्य का संबंध केवल तकनीकी या सूचनात्मक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सह-अस्तित्व का संबंध है।

डिजिटल युग में साहित्य की पहुँच पहले से कहीं अधिक विस्तृत हुई है। सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट और ऑनलाइन मंचों ने साहित्यिक रचनाओं को सीमाओं से मुक्त कर दिया है। जो पाठक पहले केवल पुस्तकों या पत्रिकाओं तक सीमित था, वह अब स्क्रीन के माध्यम से हर समय साहित्य से जुड़ा रह सकता है। इसने लेखन की लोकतांत्रिकता को बढ़ाया है -अब कोई भी व्यक्ति लेखक बन सकता है, अपने विचार

साझा कर सकता है, और समाज के विमर्श में भाग ले सकता है। इस अर्थ में मीडिया ने साहित्य को जनता के और निकट लाया है।

परंतु, इस सहजता और प्रसार के साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। साहित्य, जो कभी आत्मानुभूति और चिंतन का माध्यम था, वह अब अक्सर "तत्काल प्रतिक्रिया" और "लाइक्स-शेयर" के दबाव में रचा जाने लगा है। गहराई, प्रतीकात्मकता और सौंदर्यबोध की जगह कहीं-कहीं पर सतहीपन दिखाई देने लगा है। यह प्रवृत्ति साहित्य के मूल उद्देश्य -"मानव में मानवीयता जगाना" -से विचलन का संकेत है। इसलिए आवश्यक है कि लेखक और पाठक दोनों मीडिया की गति और साहित्य की गरिमा के बीच संतुलन बनाए रखें।

मीडिया ने निश्चय ही साहित्य को नया जीवन दिया है -उसकी भाषा को आधुनिक, अभिव्यक्ति को संवादात्मक, और विषय-वस्तु को विविध बनाया है। उसने क्षेत्रीय भाषाओं और उपेक्षित वर्गों की आवाज़ को भी मंच दिया है। यही कारण है कि आज दलित साहित्य, स्त्री विमर्श, पर्यावरण साहित्य, और डिजिटल कविता जैसी विधाएँ उभर कर सामने आई हैं। इस दृष्टि से, मीडिया ने साहित्यिक रचनाशीलता को एक नए जन आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया है।

अंततः कहा जा सकता है कि मीडिया और साहित्य का यह युग संघर्ष नहीं, सहअस्तित्व का युग है। साहित्य यदि मीडिया से प्रसार और आधुनिकता ग्रहण करता है, तो मीडिया को साहित्य से गहराई, नैतिकता और संवेदना का पाठ लेना चाहिए। दोनों मिलकर यदि समाज के विवेक को जागृत करते रहें, तो यह युग न केवल तकनीकी प्रगति का, बल्कि मानवीय पुनर्जागरण का युग सिद्ध होगा। इसलिए, आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि मीडिया की चमक-दमक के बीच साहित्य की आत्मा जीवित रहे - वह आत्मा जो समाज को सोचने, महसूस करने और बदलने की शक्ति देती है। मीडिया और साहित्य का समन्वय तभी सार्थक होगा जब वह व्यक्ति और समाज दोनों के भीतर चेतना का संचार करे, न कि केवल सूचना का। यही इस शोध-पत्र का अंतिम निष्कर्ष और दिशा है।

संदर्भ:

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। साहित्य का उद्देश्य। लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 1956।
2. सिंह, नामवर। छायावाद के बाद। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990।
3. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। समकालीन हिंदी साहित्य और मीडिया विमर्श। वाणी प्रकाशन, 2018।
4. बिष्ट, पंकज। मीडिया और समाज। राजकमल प्रकाशन, 2019।
5. वागर्थ पत्रिका, अंक 320, कोलकाता, 2022।
6. सिंह, नंदकिशोर। डिजिटल युग का साहित्य। भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2020।
7. आचार्य, राजेश्वर। जनसंचार और साहित्य का अंतरसंबंध। साहित्य अकादमी, 2021।
8. जोशी, विनोद। सोशल मीडिया और साहित्यिक चेतना। समकालीन भारतीय साहित्य, अंक 215, नई दिल्ली, 2022।

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.